

ISSN - 2231 - 2749

NUMBER - 31

2018

JOURNAL OF THE MADHYA PRADESH ITIHAS PARISHAD



EDITORS

Prof. R. N. Shrivastava

Prof. Vandana Gupta

JOURNAL OF MADHYA PRADESH ITIHAS PARISHAD

Peer Team

Professor Naveen Gideon

Department of History

Govt. Auto. Girls P.G. College of Excellence, Sagar (M.P.)

Professor B. K. Shrivastava

Department of History

Dr. Harisingh Gour University, Sagar (M.P.)

Professor R. K. Ahirwar

Department of A.I.H.C & Archaeology

Vikram University, Ujjain (M.P.)

Professor Meena Shrivastava

Department of History

Govt. K.R.G. Girls P.G. College, Gwalior (M.P.)

Professor Madhubala Kulshreshtha

Department of History

Govt. K.R.G. Girls P.G. College, Gwalior (M.P.)

Prof. Naveen Gideon

Secretary

Madhya Pradesh Itihas Parishad

Opp. Police Station, Near Lal School Gopalganj, Sagar - 470001 (M.P.)

Cell : 9425425477, 9425020650 E-Mail : mpip1958@gmail.com

17. वेदों में वर्णित मानवीय मूल्य एवं प्राकृतिक संतुलन	82
डॉ. विजया दुबे	
18. कबीर पंथ : सिख धर्म के उद्भव का आधार पंथ	86
डॉ. जरीना जॉन चौधरी	
19. वैदिक कालीन संगीत परम्परा	88
डॉ. गीता राजपूत	
20. कोयला उद्योग का इतिहास : चिरमिरी के विशेष सन्दर्भ में	92
अभिषेक अग्रवाल	
21. कलचुरि कालीन प्रमुख सरोवर (रतनपुर के कलचुरियों के विशेष संदर्भ में)	98
डॉ. अंजना झारिया	
22. देवगिरी दुर्ग : एक ऐतिहासिक दृष्टिकोण	101
डॉ. किरन दुबे	
23. संगीत एवं चित्रकला का समन्वय रागमाला/राग-रागिनी चित्र	104
डॉ. कुमकुम माथुर	
24. संस्कृत पाण्डुलिपियों में गोंड इतिहास के स्रोत (गढ़ा-मण्डला के संदर्भ में)	109
डॉ. रजनी शर्मा	
25. कलचुरि कालीन नोहटा के जैन एवं जैनेतर पुरावशेष-एक विशिष्ट दृष्टि	119
डॉ. रंजना जैन	
26. श्री दिगम्बर जैन सिद्ध क्षेत्र “मुक्तागिरी मंदिर”	126
डॉ. विजेता चौबे	
27. ब्रिटिश कालीन भारत में नारी की स्थिति : एक पुनरावलोकन	130
डॉ. अंजलि दुबे	
28. गाँधीवादी विचारों के समसामयिक अर्थ-संदर्भ	136
डॉ. पंकज सिंह	
29. डॉ. राममनोहर लोहिया का मडगाँव सत्याग्रह (गोवा मुक्ति संग्राम के संदर्भ में)	139
डॉ. आर.एन. श्रीवास्तव	
30. मालवा में बोधिसत्व मैत्रेय	142
डॉ. रामकुमार अहिरवार	
31. गोंड शासक एवं उनकी वर्तमान स्थिति	145
डॉ. संतोष कुमार तिवारी	
32. बुन्देलखण्ड की विलुप्त होती विरासतें, दुर्ग व किले	152
कमलेश अहिरवार	
33. जंगल सत्याग्रह 1930 (गंधू भोई के विशेष संदर्भ में)	157
कु. रेखा पटेल	
34. खजुराहो मूर्ति शिल्प में पशुओं का अंकन (कन्दरिया महादेव मंदिर के विशेष संदर्भ में)	160
रेनू विश्वकर्मा	

गाँधीवादी विचारों के समसामयिक अर्थ-संदर्भ

डॉ. पंकज सिंह

सहायक प्रध्यापक - इतिहास

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

आधुनिकता और भूमण्डलीकरण के इस दौर में मानव ने न सिर्फ प्रकृति से मुँह मोड़ लिया है बल्कि परम्परा, सृजन और कल्याण की अवधारणा भी लुप्त हो गई है। आज के दौर में धर्म असहिष्णु हो रहा है तो राष्ट्रवाद के मायने बदल रहे हैं। संस्कृति में अलगाव और अराजकता का प्रभाव बढ़ रहा है। विश्व पटल पर हमें कुछ ऐसे प्रबुद्ध व्यक्तियों के उदाहरण मिलते हैं जिन्होंने अपने समय और समाज को तो प्रभावित किया है बल्कि उनके कार्य, चिन्तन और दर्शन अपने समय से भी आगे था। महात्मा गाँधी ऐसे ही एक असाधारण व्यक्ति हुये जिन्हें हम एक राष्ट्र की परिपाटी में बाँधकर नहीं रख सकते। वर्तमान में दुनिया मानवीय इतिहास के संकटपूर्ण दौर से गुजर रही है और उसे एक विकल्प की तलाश है। हालांकि मार्क्सवाद ने पूंजीवाद का एक विकल्प दिया था लेकिन अपने अंतर्निहित विरोधाभासों के कारण मार्क्सवादी प्रयोग भी नाकाम हो गया। ऐसी स्थिति में लोगों की उम्मीदें गाँधी के विचारों से ही जुड़ी हैं जो कि उन्हें एक विकल्प प्रदान करता है।

गाँधीजी के संबंध में भारत के महान् शिक्षाविद् एवं दार्शनिक डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् का विचार है कि ऐसा कभी-कभी होता है कि सामान्य स्तर से ऊपर उठकर कोई असाधारण आत्मा, जिसने ईश्वर के विषय में अधिक गहराई से चिंतन किया है, दैवी हेतु का अधिक स्पष्टता के साथ प्रतिसंवेदन करती है और दैवी मार्गदर्शन के अनुरूप वीरतापूर्वक आचरण करती है। ऐसी महान आत्मा का आलोक अंधकारमय और अस्तव्यस्त संसार के लिए प्रखर संकेत दीप का काम देता है। गाँधीजी उन पैगम्बरों में से एक हैं जिनमें हृदय का शौर्य, आत्मा का शील और निर्भीक व्यक्ति की हंसी के दर्शन होते हैं। गाँधीजी का जीवन और गाँधीजी के उपदेश उन मूल्यों के साक्षी हैं, जो राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय की सीमा से परे सार्वभौम हैं और जो युगों से इस देश की धरोहर रहे हैं-आत्मा में आस्था, उसके रहस्यों के प्रति आदर-भाव, पवित्रता में निहित सौंदर्य, जीवन के कर्तव्यों का स्वीकार, चरित्र की प्रामाणिकता।

आज दुनिया निश्चित रूप से विनाश के कगार पर खड़ी है जिससे उसकी रक्षा करना काफी कठिन दिखाई दे रहा है। इसके कारण हैं सतत वैचारिक संघर्ष, विकट जातीय द्वेष जिनके परिणामस्वरूप ऐसे युद्ध छिड़ सकते हैं जिनकी मिसाल इतिहास में नहीं मिलेगी, और परमाणु अस्त्रों की संख्या में अंधाधुंध वृद्धि का बराबर बना हुआ खतरा जिससे अकल्पनीय विनाश की नौबत आ सकती है। ऐसी सूरत में, मानव जाति को अपनी अस्तित्व-रक्षा के लिए दो में से एक बल को चुनना है- नैतिक बल अथवा भौतिक बल। भौतिक बल मानव जाति को आत्मसंहार की ओर ले जा रहा है। गाँधीजी हमें दूसरी दिशा में ले जाने का संकेत करते हैं क्योंकि गाँधीजी नैतिक बल के प्रतिमूर्ति हैं। यह कहा जा सकता है कि यह कोई नयी दिशा नहीं है। पर यह वह दिशा अवश्य है जिसे दुनिया या तो भूल गयी है अथवा जिस पर चलने का साहस नहीं कर पाती। लेकिन अब